



GENERAL STUDIES (Test-20)

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

GSM (M-I)-2420

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

Name: Payal Gwalwanshi

Mobile Number: _____

Medium (English/Hindi): Hindi

Reg. Number: _____

Center & Date: 2 Sept 2024

UPSC Roll No. (If allotted): 0822591

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें बारह प्रश्न हैं तथा हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में छपे हैं।

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्न-सह-उत्तर-पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

There are **TWELVE** questions printed both in **HINDI** and **ENGLISH**.

All the questions are compulsory.

The number of marks carried by a question is indicated against it.

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

केवल मूल्यांकनकर्ता द्वारा भरा जाए (To be filled by Evaluator only)

Question Number	Marks	Question Number	Marks
1 (a)		5 (b)	
1 (b)		6 (a)	
2 (a)		6 (b)	
2 (b)		7.	
3 (a)		8.	
3 (b)		9.	
3 (c)		10.	
4 (a)		11.	
4 (b)		12.	
5 (a)			

Grand Total (सकल योग)

मूल्यांकनकर्ता (हस्ताक्षर)

Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्ता (हस्ताक्षर)

Reviewer (Signature)

www.drishtiias.com

Contact: 8750187501

Feedback

- | | |
|---|--|
| 1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता) | 2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता) |
| 3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता) | 4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह) |
| 5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता) | 6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता) |

खंड - क/ SECTION - A

1. (a) वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकीय अनुसंधान में नीतिशास्त्र के संदर्भ क्या हैं? अपने उत्तर को उदाहरणों के साथ संपूर्ण कीजिये। (150 शब्द) 10
- What are ethics in scientific and technological research? Provide examples to support your answer. (150 Words) 10

ग्लोबल पार्टनरशिप फॉर
आर्थिकीयल (GPAI) की बैठक में 'AI' जैसे
नई प्रौद्योगिकी में नीतिका को शामिल करने
का संकल्प लिया गया है।

वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकीय
अनुसंधानों में विज्ञान के साथ ही नीतिकशास्त्र
जैसे विषय का समन्वित आवश्यक है ताकि वह
मानव कल्याण के लिये उपयोगी होगी।

उदाहरण के लिये -

→ कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित तकनीकों में
मानवीय डेटा की सुरक्षा होना आवश्यक
है।

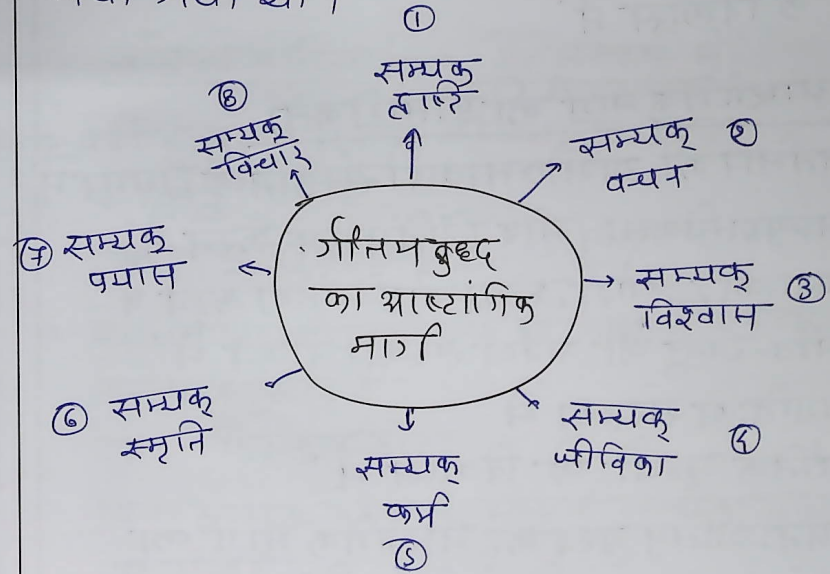
→ जीपकेक, जेनोमिक्स, डेटा चोरी आदि द्वारा
मानवीय जीवन में हानिपूर्ण अनैतिक कार्रवाई
है।

वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान में
नीतिशास्त्र

- ① नई दवाओं के परीक्षण हेतु गरीब लोगों का उपयोग करना अनैतिक है।
→ अतः ऐसा करने से पहले उनकी अनुमति लेना आवश्यक है।
- ② नई औद्योगिकी जैसे - बी.टी. बैंगन एवं GM सरसों के प्रयोग के पहले पर्याप्त अनुसंधान करना
- ③ स्टेम सेल कोशिका आधारित उपचार का, जीन एडिटिंग आदि का प्रयोग डिजाइनर बेबी हेतु न करना
- ④ विज्ञान का प्रयोग कोरोना वायरस जैसे - घातक वायरस के निषेध में न करना
उपस्थित सभी उदाहरण हमें वैज्ञानिक अनुसंधान की मानवीय कल्याण हेतु नैतिक प्रयोग हेतु प्रेरित करते हैं न कि भाव संकट उत्पन्न करने।

- (b) क्या आपको लगता है कि महात्मा बुद्ध के लगभग सभी उपदेशों में संदर्भित अष्टांगिक मार्ग का सिद्धांत आज भी उनके अनुयायियों के लिये उतना ही स्पष्ट और व्यावहारिक है, जितना तब था जब उन्होंने इसे प्रथमतः प्रतिपादित किया था? (150 शब्द) 10
- Do you think Buddha's eightfold path which he taught in virtually all his discourses, is as clear and practical to his followers today as it was when he first gave it? (150 Words) 10

गीतम बुद्ध - आराध्यात्मिक
आडम्बरी, आतिगन भेदभाव आदि के विरुद्ध
मोक्ष की प्राप्ति और जीवन की नैतिक मार्ग
में ले जाने हेतु अष्टांगिक मार्ग का सिद्धांत
दिया गया था।



प्रास्तांगिक मार्ग का महत्व

- जीवन को संतुलित बनाने में
- प्रवृत्ति मार्ग की अपेक्षा विवृत्ति मार्ग की ओर
- सामाजिक सौहार्द स्थापित करने में
- कर्मवाद को बढ़ावा
- कला, साहित्य, कला, विमानदारी जैसे मूल्यों के विकास में

प्रास्तांगिक मार्ग की प्रास्तांगिकता

- 1) वर्तमान की उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रियमय में
- 2) साम्प्रदायिकता, मोब लिचिंग कम करने में
- 3) बलात्कार, चोरी, हत्या को प्रियंत्रण करने में
- 4) जीव-जन्तु की अर्थव्यवस्था तस्करी रोकने में
- 5) पर्यावरण संरक्षण में
- 6) प्रतिक मूल्यों के विकास में

अतः जीवन बुद्ध का प्रास्तांगिक मार्ग का सिद्धांत सफलता की कुंजी है जो वर्तमान में एक नैतिकता आधारित व्यवस्था के निर्माण का आधार हो सकता है।

2. (a)

जनसंपर्क (PR) में सोशल मीडिया के उपयोग ने सूचना के प्रसार और उपभोग के तरीके को रूपांतरित किया है। सोशल मीडिया के माध्यम से चलाए जा रहे जनसंपर्क अभियानों से जुड़ी नैतिक चुनौतियों का विश्लेषण कीजिए। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों के माध्यम से आमजन से संवाद के दौरान जनसंपर्क पेशेवर नैतिक आचरण कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं? (150 शब्द) 10

The use of social media in public relations (PR) has transformed the way information is disseminated and consumed. Analyze the ethical challenges associated with social media PR campaigns. How can PR professionals ensure ethical conduct while engaging with audiences on social media platforms? (150 Words) 10

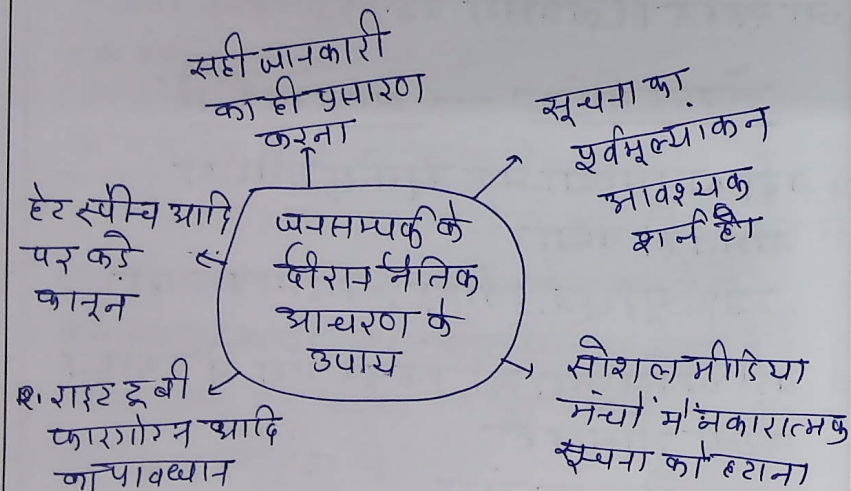
भारत में विश्व की सबसे बड़ी जनसंख्या इंटरनेट उपयोगकर्ता हैं। साथ ही, सोशल मीडिया की रफ़्तक भी दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। (लगभग 33%)

सोशल मीडिया → जनसम्पर्क में

- बड़ी जनसंख्या तक सूचना प्रसारण संभव ही पाया
उदा० यूट्यूब, ट्वीटर, व्हाट्सएप द्वारा
- बड़ी जनसंख्या को एक ही ग्रंथ में एकिकृत करना आसान है
उदा० फेसबुक, इंस्टा
- बिना पत्र, पत्र, पत्र के सम्पर्क साधना आसान हो गया है
उदा० - टेलीविजन, वीडियो, आडियो के माध्यम से

सोशल मीडिया से जुड़ी नैतिक चुनौतियाँ

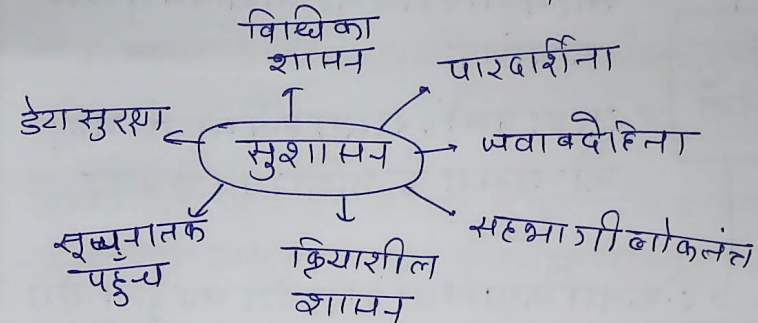
- (1) जनता की भावनाओं के साथ खिलवाड़
- (2) फेक न्यूज का तीव्र प्रसारण
- (3) किसी विशेष मुद्दे के तालन और प्रस्तुत कर अप्रत्यक्ष बड़ावा
- (4) धर्म, नस्ल आधारित भेदभाव की बड़ावा



अतः जनसम्पर्क के दौरान ऐसी कोई सूचना का प्रसारण नहीं जो समाज में विह्वल को जन्म दे।

- (b) डेटा गोपनीयता एवं इसकी सुरक्षा के संबंध में शासन, व्यक्तियों की सुरक्षा के लिये समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस कथन के आलोक में, गोपनीयता एवं राष्ट्रीय सुरक्षा के मध्य संतुलन बनाने में आने वाली नैतिक चुनौतियों पर चर्चा कीजिये। (150 शब्द) 10
- Governance around data privacy and security is an important part of society to protect individuals. In the light of this statement, discuss the ethical challenges faced in balancing privacy and national security. (150 Words) 10

1992 में विश्व बैंक द्वारा शासन में नैतिकता शीर्षक से रिपोर्ट जारी की गई जिसमें कई सिद्धांत प्रस्तुत किये जो सुशासन की स्थापना हेतु आवश्यक हैं।



डेटा सुरक्षा एवं गोपनीयता में शासन की भूमिका

सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम 2008 की धारा 66A, 64 आदि में डेटा गोपनीयता का प्रावधान किया गया है।

→ साथ ही, सरकार द्वारा डेटा संरक्षण विधेयक

पास करके, डेटागोपनीयता एवं सुरक्षा
सुनिश्चित की गई
(B.N. श्रीकृष्णा समिति की सिफारिश पर)

गोपनीयता एवं राष्ट्रीय सुरक्षा के बीच
सुर संतुलन बनाने में

नैतिक
चुनौतियाँ

- सूचना का अधिकार बनाम राष्ट्रीय
साथ गोपनीयता अधिनियम 1987
का संघर्ष
 - सुरक्षा बलों, सुरक्षा एजेंसियों आदि
की सूचना के अधिनियम से बाहर
रखना
 - ई.कामरुद्दीन निया' द्वारा देश का दुर्लभ योग
 - बीमा कम्पनियों द्वारा स्वास्थ्य डेटा का दुर्लभ योग
 - आतंकवादी संगठनों द्वारा राष्ट्रीय सुरक्षा संबंधी
सूचना तक पहुँच उदा. - पुरमाणु संयंत्रों
- हॉटल, स्कूलों तक
- अतः गोपनीयता का पालन राष्ट्रीय सुरक्षा संबंधी
गुप्तता में आवश्यक है ताकि संबंधित नीति सूचना
तक अपराधियों की पहुँच को रोक जा सके।

नीचे महान विचारकों के तीन उद्धरण दिये गए हैं। इनमें से प्रत्येक उद्धरण वर्तमान संदर्भ में आपको क्या संदेश
देता है?

Given below are three quotations of great thinkers. What do each of these quotations convey to
you in the present context?

(a) देशभक्ति हमारा अंतिम आध्यात्मिक आश्रय नहीं हो सकती; मेरा आश्रय मानवता है। - रवींद्रनाथ टैगोर

(150 शब्द) 10

Patriotism cannot be our final spiritual shelter; my refuge is humanity. - Rabindranath Tagore.
(150 Words) 10

रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा राष्ट्रवाद की
चैतना जागृत करने हेतु आध्यात्मिक स्तर पर
प्रयास किया गया था परन्तु साथ ही, प्रकृति,
जीव-जन्तु के प्रति करुणा प्राथमिक उद्देश्य
था।

देशभक्ति हमारा अंतिम आध्यात्मिक आश्रय
नहीं हो सकती, मेरा आश्रय मानवता है।

उपर्युक्त कथन से यह तात्पर्य है
कि केवल देशभक्ति ही नहीं अपितु इसमें
मानवीय मूल्यों का समावेश आवश्यक है।
उदाहरण - पाकिस्तान के आतंकवादी संगठनों
में अपने देश के प्रति देशभक्ति है
परन्तु मानवता की अनुपाधिति है।

वर्तमान के दौर में, वास्तविक देशभक्ति
है मानवता तक पहुँच सिद्धांत करना

उदाहरण

- (1) गांधीजी के सर्वोच्च सिद्धांत के अनुसार
देश के सभी लोगों का समावेशी विकास
- (2) सभी लोगों के धर्म, आस्था, विचारों का
सम्मान करना
- (3) प्रत्येक नागरिक को विकास के समान
अवसर उपलब्ध करना

उदाहरण - फिनलैंड, कनाडा आदि देशों द्वारा
नागरिकों का कल्याण ही वास्तविक
देशभक्ति है।

हमारे देश के स्वामी विवेकानंद, महात्मा
गांधी, ज्योतिबा फुले जैसे महान राष्ट्रभक्तों
ने मानवता को संदेव सर्वोपरि रखा।

अतः मानवता का पालन ही,
देश का सम्मान सुनिश्चित करता है।

- (b) थोड़ा-सा अभ्यास टन भर उपदेश से अधिक मूल्यवान है। - महात्मा गांधी (150 शब्द) 10
An ounce of practice is worth more than tons of preaching. - Mahatma Gandhi. (150 Words) 10

नेल्सन मण्डेला, महात्मा गांधी,
जॉ. धम्बेडकर, मार्टिन लूथर, ज्योतिबा फुले
आदि कई कई उदाहरणों हैं जिन्होंने
कहने के स्थान पर करने को महत्व दिया।

वास्तव में, केवल उपदेश देने
से कार्य सफल नहीं हो सकते हैं इसके
लिये कार्य करना, अभ्यास करना आवश्यक
है।

उदाहरण के लिये

- (1) कैलाश सत्यापी द्वारा केवल बच्चों के
जीवन की सुरक्षा और शिक्षा हेतु
उपदेश नहीं दिये गये अपितु प्रयास
भी किये गये। जिसके आधार पर
उन्हें नोबल पुरस्कार दिया गया।

- (2) वहीं महात्मा गांधी द्वारा स्वतंत्रता की

महाई में अक्समशन जुटाने हेतु, आषणों की प्रपेक्षा स्वयं आंदोलन में संलग्न होकर, अक्सवा को धर्म बनाया गया है।

वर्तमान में आसंगिकता

(1) वर्तमान में भी, जलवायु परिवर्तन पर कई सम्मेलन जैसे- UNFCCC COP-28, आदि हुए परन्तु वास्तविक सफलता है, सिद्धांतों को अभ्यास में लाने में।

(2) भारतीय प्रधानमंत्री द्वारा लाइफ मिशन दिया गया है परन्तु इसे केवल वाणी में रखने की जगह जीवन में उतारना आवश्यक है।

अतः उपदेसों की बीधारसे अच्छा है बिना समय गंवाए कार्य में लग जाना जो सफलता की ओर बढ़ने की सही राह नीति है।

(c) जब भी आप कोई काम करें, तो ऐसे व्यवहार करें जैसे पूरी दुनिया आपको देख रही हो। - थॉमस जेफरसन

(150 शब्द) 10

Whenever you do a thing, act as if all the world were watching. - Thomas Jefferson (150 Words) 10

प्रथम विश्व युद्ध और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद आन्तरिक चारि, संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा किये गये सुधार कार्यों पर सबकी नजर थी।

इसी कारण, इन संस्थानों का विकास लोकतांत्रिक संगठनों, मानवीय मूल्यों के रक्षक के रूप में हुआ।

अतः जब भी आप कोई काम करें तो ऐसे व्यवहार करें जैसे पूरी दुनिया आपको देख रही है।

थॉमस जेफरसन का यह वाक्य नैतिक व्यवस्था की स्थापना हेतु मूल वाक्य है।

कारण

1) यदि सभी लोगों को यह बौद्ध होगा कि उनके कार्य का निरीक्षण हो रहा है तो वे सावधानी से काम करेंगे।

लाभ - भ्रष्टाचार, चोरी जैसे अपराधों में कमी

- खाद्य पदार्थों में मिलावट, रसायनों के प्रयोग पर रोक

2) यदि व्यक्ति को अहसास है कि उसके कार्य को लोग देख रहे हैं तो वह ईमानदारी और नैतिक मूल्यों का पालन करेगा

उदाहरण - नीरज चौपड़ा जैसे खिलाड़ियों द्वारा पदक प्राप्त करने हेतु ईमानदारी से प्रयास करना

- सivil सेवकों द्वारा नीतियों का कार्यान्वयन सत्यनिष्ठा से करना

अतः एक नियामक तंत्र का होना आवश्यक है जो नैतिक व्यवस्था की स्थापना में सहायक हो।

4. (a)

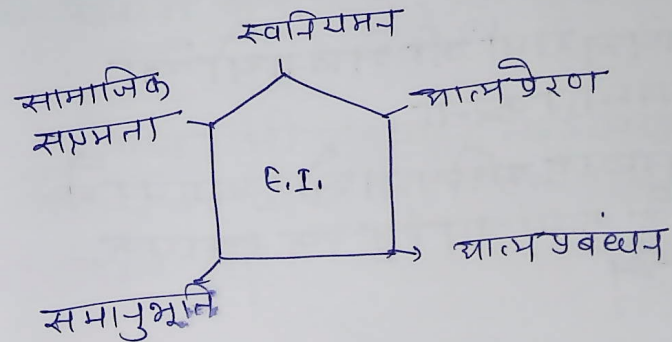
भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) को परिभाषित कीजिये। इसके प्रमुख घटकों पर चर्चा कीजिये। स्पष्ट कीजिये कि प्रत्येक घटक लोक प्रशासन में प्रभावी नेतृत्व में किस प्रकार योगदान देता है। (150 शब्द) 10

Define Emotional Intelligence (EI). Discuss its major components. Explain how each component contributes to effective leadership in public administration. (150 Words) 10

1990 में 'सेलीवी और मैयर' द्वारा What is Emotional Intelligence नामक निबंध लिखा गया था। जिसमें भावनात्मक बुद्धिमत्ता हेतु लिखा था -

- अपनी भावनाओं को प्रत्यक्ष करना
- भावनाओं पर विचार और चिन्तन करना
- भावनाओं को समझना
- भावनाओं को संबंधन करना

वही 1997 में डैनियल गौलमैन द्वारा Why Emotional Intelligent matter more than IQ में विभिन्न सिद्धांत दिए गए



लोकप्रशासन में 'उभाकी' नेतृत्व हेतु 11

(1) लोक सेवकों द्वारा स्वयं की भावनाओं को नियंत्रण रखना

उदाह किसी गरीब की सहायता समय अत्यधिक भावुक न हो जाना

(2) अटिल मुद्दों में भावनाओं को प्रबंधित करने में

उदाह गुल्मा, क्रोध आदि पर नियंत्रण

(3) निम्न वर्गों की भावनाओं, आवश्यकताओं का समझने, समानुभूति अनुभव करने

(4) समाज के कल्याण हेतु सर्वदेव लक्ष्य रखने और सामाजिक सौघर्ष की स्थापना करने

उदाह विभिन्न धर्मों की भावनाओं का सम्मान करना

अतः भावनात्मक बुद्धिमत्ता लोकप्रशासन में नीतियों के कार्यान्वयन हेतु एक सहायक उपकरण है।

(b) नागरिक अधिकार पत्र तथा सहभागी शासन की अवधारणा के बीच संबंधों का परीक्षण कीजिये।

(150 शब्द) 10

Examine the relationship between Citizen Charters and the concept of participatory governance.

(150 Words) 10

1991 में सर्वप्रथम ब्रिटेन के तात्कालीन प्रधानमंत्री जॉन मेजर ने नागरिक घोषणापत्र की शुरुआत की थी।

नागरिक घोषणापत्र की विशेषताएँ

(1) सरकारी संस्थानों द्वारा अपने संस्थान के उद्देश्यों का स्पष्टीकरण

(2) आम नागरिकों को प्राप्त होने वाली सुविधाओं एवं आवश्यकताओं का स्पष्ट विवरण

(3) शिकायत निवारण तंत्र

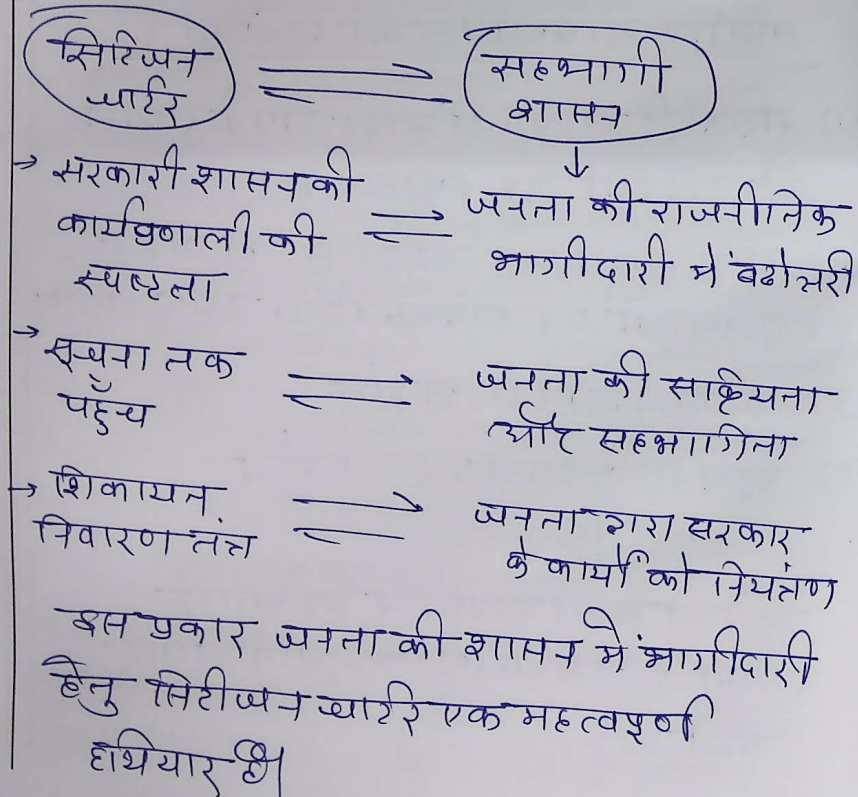
(4) सूचना के अधिकार की पहुँच

॥

उपर्युक्त सभी आवश्यक सहभागी शासन की अवधारणा की नींव रखने वाले हैं।

नागरिक घोषणापत्र एवं सहभागी शासन के बीच संबंध

दोनों विचार परस्पर अंतर्संबंधित हैं। जन: एक के पालन से दूसरे की सुनिश्चितता होगी।



5. (a)

समकालीन भारतीय राजनीति के संदर्भ में, मतदाता व्यवहार पर संज्ञानात्मक असंवादिता के संभावित निहितार्थों और लोकतांत्रिक प्रक्रिया पर इसके प्रभाव का विश्लेषण कीजिये। (150 शब्द) 10

In the context of contemporary Indian politics, analyze the potential implications of cognitive dissonance on voter behavior and its impact on the democratic process. (150 Words) 10

संज्ञानात्मक - असंवादिता से तात्पर्य है जब कोई व्यक्ति परस्परविरोधी विश्वास, इच्छा या कार्य करता है, तो उसे मानसिक असुविधा का अनुभव होता है, इसी ही संज्ञानात्मक असंवादिता कहते हैं।

समकालीन राजनीति में इसका प्रभाव

(1) वर्तमान में, राजनीति के क्षेत्र में उचित मैना के चुनाव में इसका सामना किया जा रहा है।

उदाहरण - दामोदर द्रव की नीतियाँ सुधारवादी हैं परन्तु केवल आत्मकेंद्रित और आक्रामक हैं जन: ऐसे में मतदाता के मन में उद्वेग उत्पन्न होता है।

लोकतांत्रिक प्रक्रिया में प्रभाव

- (1) नेताओं द्वारा जनता को लोक-लुभावन विकल्प देना
- (2) जनता की भावनाओं के साथ खेलना
- (3) गुणमाप्ति, विनीय सहायता, पुष्कार आदि जनता के विचारों को प्रभावित करने हैं।

ऐसे समय जनता व्यवहार संग्रामक असंवादिता के कारण लोकतांत्रिक न होकर, बाह्य प्रभाव से निर्देशित होता है।

समाधान

- (1) आचार संहिता का पालन
- (2) चुनाव से पहले किसी लोक लुभावन सीने पर रोक

नतः लोकतंत्र की स्थापना हेतु निष्पक्ष, स्वतंत्र चुनाव होना आवश्यक है।

- (b) परिवार में अभिभावक अपने बच्चों के नैतिक विकास में मुख्य शिक्षक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कैसे करते हैं? (150 शब्द) 10
- How do parents play an important role as the main educator in the family in moral development of their children? (150 Words) 10

बच्चों के जीवन के प्राथमिक शिक्षक उनके माता-पिता ही होते हैं। जो बच्चों में कई नैतिक मूल्यों का विकास करते हैं।

उदाहरण

- (1) राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की माता पुतलीबाई द्वारा गांधीजी को गीता की शिक्षा देना
- (2) सिवाजी की माता जीजाबाई द्वारा उन्हें नैतिक शिक्षा देना
- (3) ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की माता और बड़ी बहन द्वारा नैतिक मूल्यों के विकास में सहायता करना

परिवार द्वारा नैतिक विकास के तरीके

(1) क्लामिकल काउन्सिलिंग

इसके माध्यम से बच्चों की अच्छी कार्य करने हेतु प्रेरित किया जाना है।
उदा० बड़ी का आदर करना

(2) इन्ट्रिन्सिकल काउन्सिलिंग - इसमें सामान्यतः पुरस्कार एवं दण्ड का प्रयोग किया जाता है।

उदा० दूसरों का धोका देना पर पुरस्कार देना

(3) आब्सर्वेशनल काउन्सिलिंग - इसमें परिवार वालों के व्यवहार से बच्चे सीखते हैं। उदा० - माता-पिता का एक-दूसरे को सम्मान देना।

अतः परिवार ही शिक्षा का पहला पाठशाला है जहाँ बुनियादी मूल्यों का विकास होता है।

6. (a)

“लोक प्रशासन में नीतिशास्त्र का तात्पर्य केवल नियमों का पालन करना नहीं है, बल्कि सही विकल्प का चयन करना भी है।” स्पष्ट कीजिये।
(150 शब्द) 10

“Ethics in public administration is not just about following rules, but also about making the right choices.” Explain.
(150 Words) 10

लोक प्रशासन से आशय है,
शासन द्वारा निर्मित कानूनों, नियमों, नीतियों
सोपनाओं को अपना तक पट्ट्या न हो।

साथ ही लोक प्रशासन के प्राथमिक
मूल्य हैं -

- जनता का कल्याण
- जनता की आवश्यकता की पूर्ति
- विकास को बढ़ावा

अतः यदि शासन के नियम जनता के हितों के विरुद्ध हों तो उनके पालन के स्थान पर सही विकल्प का चयन ही सही रणनीति है।
उदाहरण के रूप में

① अजगतीय बहुल क्षेत्र में 'आदिवासी' लोगों के पास दस्तावेजों की कमी होने पर भी, सरकारी योजनाओं को लागू करना, न कि पिछड़ों के प्रति प्रतिबद्धता

② सामुदायिक संघर्षों में अतिल स्थिति में 'नियमों' के पालन के साथ यथावधि अनुकूल सही विकल्प का प्रयोग करना

③ मरणा आदि कार्य वितरण में अत्यधिक गरीब लोगों को प्राथमिकता देना

अतः केवल नियम ही नहीं अपितु प्रतिक्रिया का पालन लोक प्रशासन की सफलता को सुनिश्चित करती है।

- (b) अच्छी शिक्षा कल्पनातीत है यदि वह उत्तम जीवन और सामाजिक कल्याण के लिये आवश्यक मूल्यों को विकसित करने में विफल रहती है। टिप्पणी कीजिये।
Good education is inconceivable if it fails to inculcate values essential to good life and social well-being. Comment.

(150 शब्द) 10
लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

नई शिक्षा नीति 2020 में अच्छी शिक्षा के उद्देश्य की प्राप्ति हेतु उसमें कई प्रावधान किये गये हैं-

(1) शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा की अनिवार्यता

(2) प्रारंभिक कक्षा में मातृभाषा में शिक्षा

(3) उच्च कक्षाओं में विभिन्न विषयों का ज्ञान, निभाषा सूत्र का पालन

अतः अच्छी शिक्षा केवल ज्ञान तक सीमित नहीं होनी चाहिये अपितु उसमें मानवीय मूल्यों एवं सामाजिक मूल्यों का भी समावेश होना चाहिये।

मध्धी शिशु का महत्व

- 1) लोगो 'मे' आपसी सम्मान को बढ़ावा
- 2) नर्कवाद, चिन्तन को बढ़ावा
- 3) कौशल विकास
- 4) सामाजिक मूल्यों का विकास

वर्तमान में 'शिशु' नर्स की कामियाँ

- 1) स्कूलों में 'शिशु' की अनुपस्थिति
- 2) विद्यालयी व्यवस्था की कमी
- 3) पोषण युक्त भोजन के स्थान पर मिठावट पाला भोजन
- 4) बच्चों में मानसिक योग्यता और बौद्धिक प्रमत्ता का धन्य विकास

अतः निपुण भारत के संकल्पना शिशु की गुणवत्ता में वृद्धि कर अस्सी शिशु की जीवित पैदावार तक ले सकें SDG-4 तक पहुँच सुनिश्चित होगी।

खंड - ख / SECTION - B

श्री अर्जुन एक प्रतिष्ठित व्यवसायी हैं और अपने समुदाय में एक प्रमुख व्यक्ति हैं। अपने परोपकार और व्यावसायिक कौशल के लिये जाने जाने वाले, उन्होंने विभिन्न सामाजिक कारणों के लिये उदार व सहायक होने के लिये प्रतिष्ठा बनाई है। उनके बेटे, रवि, जो 25 वर्षीय महत्वाकांक्षी संगीतकार हैं, को हाल ही में अंतिम चरण की यकृत संबंधी बीमारी का पता चला है। रवि की कम उम्र और उसकी हालत की गंभीर प्रकृति को देखते हुए, यह निदान परिवार के लिये एक गहरा आघात है।

मेडिकल टीम ने श्री अर्जुन को सूचित किया है कि रवि को जीवित रहने के लिये तत्काल यकृत प्रत्यारोपण की आवश्यकता है। यद्यपि, अंगदान की प्रतीक्षा सूची लंबी है और समय पर यकृत मिलने की संभावना बहुत कम है। प्रत्यारोपण के बिना बीतने वाला प्रत्येक दिन रवि के बचने की संभावना को कम करता है, जिससे श्री अर्जुन और उनके परिवार की चिंता व हताशा बढ़ती जा रही है।

जिस अस्पताल में रवि का उपचार चल रहा है, उसके चिकित्सा निदेशक डॉ. मेहता अधिकरण समिति में हैं और श्री अर्जुन के पुराने मित्र हैं। उनकी दोस्ती उनके कॉलेज के दिनों से है और विगत कई वर्षों से वे एक-दूसरे की सहायता करते आए हैं। कई वर्ष पूर्व, डॉ. मेहता के जीवन के एक मुश्किल दौर में, श्री अर्जुन ने उन्हें वित्तीय सहायता और व्यक्तिगत परामर्श देकर महत्वपूर्ण सहायता की थी। डॉ. मेहता हमेशा श्री अर्जुन के दयालुता और समर्थन के लिये उनके आभारी रहे हैं।

उनके घनिष्ठ संबंधों को देखते हुए, श्री अर्जुन को डॉ. मेहता से रवि के मामले को तेजी से निपटाने और प्रतीक्षा सूची में अन्य रोगियों की तुलना में उसे प्राथमिकता देने के लिये कहने का प्रबल प्रलोभन अनुभव होता है। अपने बेटे की स्थिति की तात्कालिकता और उसके द्वारा अनुभव की जा रही भावनात्मक बैचनी के कारण श्री अर्जुन के लिये इस तरह के अनुरोध के व्यापक नीतिशास्त्रीय निहितार्थों पर विचार करना मुश्किल हो जाता है।

उपरोक्त केस स्टडी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये

(a) इस स्थिति में डॉ. मेहता को कौन-से नीतिशास्त्रीय सिद्धांतों के आधार पर निर्णय लेना चाहिये?

(b) डॉ. मेहता को सभी मरीजों के लिये उचित उपचार सुनिश्चित करते हुए श्री अर्जुन के व्यक्तिगत दबाव को कैसे संभालना चाहिये?

(c) अंग आवंटन प्रक्रिया में हितों के संघर्ष को रोकने के लिये क्या उपाय कार्यान्वित किये जा सकते हैं? (250 शब्द) 20

Mr. Arjun is a well-respected businessman and a prominent figure in his community. Known for his philanthropy and business acumen, he has built a reputation for being generous and supportive of various social causes. His son, Ravi, a 25-year-old aspiring musician, has recently been diagnosed with end-stage liver disease. The diagnosis has come as a severe blow to the family, given Ravi's young age and the critical nature of his condition.

The medical team has informed Mr. Arjun that Ravi requires an immediate liver transplant to survive. The organ donation waiting list, however, is long, and the chances of receiving a liver in time are slim. Each day that passes without a transplant decreases Ravi's chances of survival, adding to the anxiety and desperation felt by Mr. Arjun and his family.

Dr. Mehta, Medical Director of the Hospital where Ravi is being treated, is on the authorization committee and an old friend of Mr. Arjun. Their friendship dates back to their college days, and over the years, they have supported each other through various personal and professional challenges. Years ago, during a particularly difficult time in Dr. Mehta's life, Mr. Arjun extended significant help, providing financial

support and personal counsel. Dr. Mehta has always felt indebted to Mr. Arjun for his kindness and support.

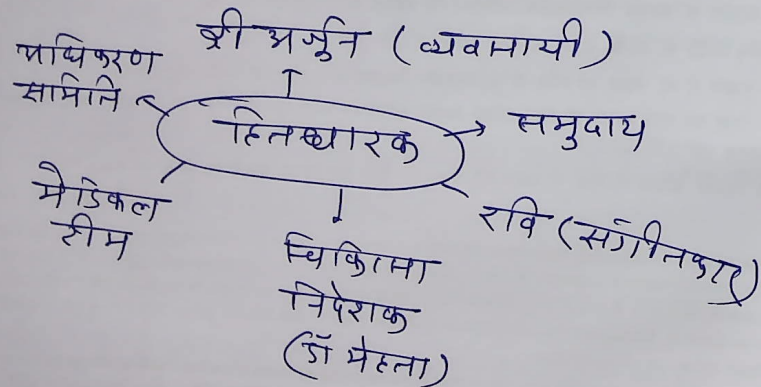
Given their close relationship, Mr. Arjun feels a strong temptation to ask Dr. Mehta to fast-track Ravi's case and prioritize him over other patients on the waiting list. The urgency of his son's condition and the emotional turmoil he is experiencing make it difficult for Mr. Arjun to consider the broader ethical implications of such a request.

Answer the following questions based on the above case study

- What ethical principles should guide Dr. Mehta's decision in this situation?
- How should Dr. Mehta handle the personal pressure from Mr. Arjun while ensuring fair treatment for all patients?
- What measures can be implemented to prevent conflicts of interest in the organ allocation process?

(250 Words) 20

किस स्थिति - श्री अर्जुन द्वारा आपसी संबंध के माध्यम पर बेटे के इलाज हेतु अंग शान्ति में डॉ. मेहता की सहायता लेना।



उम्मीदवार को इस
हार्शिये में नहीं
लिखना चाहिए।
(Candidate must
not write on this
margin)

(क) डॉ. मेहता को निम्न नीतिशास्त्रीय सिद्धांतों के माध्यम पर निर्णय लेना चाहिए -

(1) विधि के शासन का चालन - अर्थात् सभी मरीजों के हितों का ध्यान रखना

(2) निष्पक्षता का सिद्धांत - बिना किसी संबंध देखे, नियम एवं समय का पालन

(3) मित्रता का सिद्धांत - चूंकि डॉ. मेहता और श्री अर्जुन निकट मित्र हैं अतः इनके किसी अन्य सुझाव देना

(4) परोपकारिता का सिद्धांत - श्री अर्जुन ने उनकी कई बार मदद की है अतः डॉ. मेहता को रवि की गंभीर हालत देखकर कोई भी निगान विकल्प प्रस्तुत करना

⑥ डॉ. मेहता को श्री अर्जुन के व्यावसायिक
हवा के काम संभालना होगा

(1) डॉ. मेहता द्वारा श्री अर्जुन को बिच्छे के
काम का ज्ञान कराना, चूंकि वे स्वयं
परौपकारी इंसान हैं अतः वे इस बात
का समझेंगे।

⑦ डॉ. मेहता को चिकित्सीय आचार संहिता
को आधार बनाते हुए व्यवसायिक
मूल्यों की रक्षा की दुहाई देना

⑧ श्री अर्जुन से मित्रता को बनाए रखने
के लिए, उन्हें रवि के इलाज में निजगी
मदद हो सके करना

⑨ श्री अर्जुन को किसी निजी संस्था
से रवि के लिए धाग उपहारों का
सुझाव देना

⑩ अंग आवंटन की प्रक्रिया में 'हिता' के
संबंधों से रवि के उपाय

(1) मृत्यु से पहले लोगों की धागदान हेतु
स्वीकृति ले लेना जिसमें अंगों की
कमी नहीं होगी।

⑪ अंगों के आवंटन हेतु पारदर्शी
प्रक्रिया का पालन करना

⑫ निजी हित के स्थान पर सार्वजनिक
हित को प्राथमिकता देना

⑬ निजी रिश्तेदारों को अंग आवंटन में
सहायता करने पर दण्ड एवं जुर्माना
लगाया

उपरोक्त प्रयासों द्वारा अंग आवंटन
की प्रक्रिया को निष्पक्ष बनाया जा
सकता है।

8. आप एक ऐसे जिले के जिला मजिस्ट्रेट (DM) हैं जो अपने धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व के लिये जाना जाता है। समुदाय के भीतर गहराई से संबंधित एक प्रमुख धार्मिक संगठन, एक बड़े पैमाने पर धार्मिक आयोजन की योजना बनाता है। यद्यपि, संगठन को वित्तीय बाधाओं का सामना करना पड़ता है और इतनी बड़ी सभा के लिये आवश्यक सुरक्षा उपायों की पूर्ण तैनाती सुनिश्चित करने के लिये आवश्यक धन की कमी होती है। आप संभावित जोखिमों से अवगत हैं, विशेष रूप से ऐसे सघन भीड़ वाले आयोजनों में भगदड़ की संभावना। आपकी आपत्तियों के बावजूद, आपको आयोजन की अनुमति देने के लिये भारी सामाजिक और राजनीतिक दबाव का सामना करना पड़ता है। स्थानीय राजनेता, जो धार्मिक गुरुओं और उनके संगठनों को महत्वपूर्ण वोट बैंक के रूप में देखते हैं, प्रभाव डालते हैं, आपसे कठोर शर्तों के बिना आयोजन को मंजूरी देने का आग्रह करते हैं। दबाव में आकर, आप कुछ शर्तों के साथ अनुमति दे देते हैं। आयोजन के दिन, भगदड़ होती है, जिसके परिणामस्वरूप 100 लोगों की दुखद मृत्यु हो जाती है।

इस त्रासदी से समुदाय सदमे और शोक में है एवं मीडिया और जनता का ध्यान तुरंत इस बात पर जाता है कि इसके लिये कौन जिम्मेदार है। जिला मजिस्ट्रेट के रूप में, आप विवाद के केंद्र में हैं। उत्तरदायित्व का प्रश्न भी बढ़ा है तथा धार्मिक संगठन और स्थानीय प्रशासन दोनों ही जाँच के दायरे में आते हैं।

इसके बाद, भगदड़ के कारणों की जाँच करने और यह निर्धारित करने के लिये एक आधिकारिक जाँच शुरू की जाती है कि क्या लापरवाही की इसमें कोई भूमिका थी। जाँच से पता चलता है कि धार्मिक संगठन, अपनी वित्तीय बाधाओं के बावजूद, भीड़ को नियंत्रित करने के बुनियादी उपायों को भी कार्यान्वित करने में विफल रहा। यद्यपि, जाँच इस तथ्य की ओर भी इशारा करती है कि आपके कार्यालय द्वारा दी गई अनुमति में आवश्यक शर्तों और निरीक्षण का अभाव था, जो आपदा का कारण बना।

- (a) इस मामले में शामिल हितधारकों का उल्लेख कीजिये।
(b) इसमें नीतिशास्त्रीय चुनौतियाँ क्या हैं?
(c) भारत में भगदड़ की घटनाएँ आम क्यों हैं और इनमें से कई धार्मिक समारोहों में क्यों हुई हैं? आप इसे रोकने के लिये सबसे पहले क्या उपाय करेंगे?

(250 शब्द) 20

You are the District Magistrate (DM) of a district known for its religious and cultural significance. A prominent religious organization, deeply embedded within the community, plans a large-scale religious event. The organization, however, faces financial constraints and lacks the necessary funds to ensure the full deployment of safety measures required for such a large gathering. You are aware of the potential risks, especially the possibility of a stampede in such densely packed events. Despite your reservations, you face immense societal and political pressure to grant permission for the event. Local politicians, who see the religious gurus and their organizations as significant vote banks, exert significant influence, urging you to approve the event without stringent conditions. Yielding to pressure, you give permission, albeit with reservations. On the day of the event, a stampede occurs, resulting in the tragic loss of 100 lives.

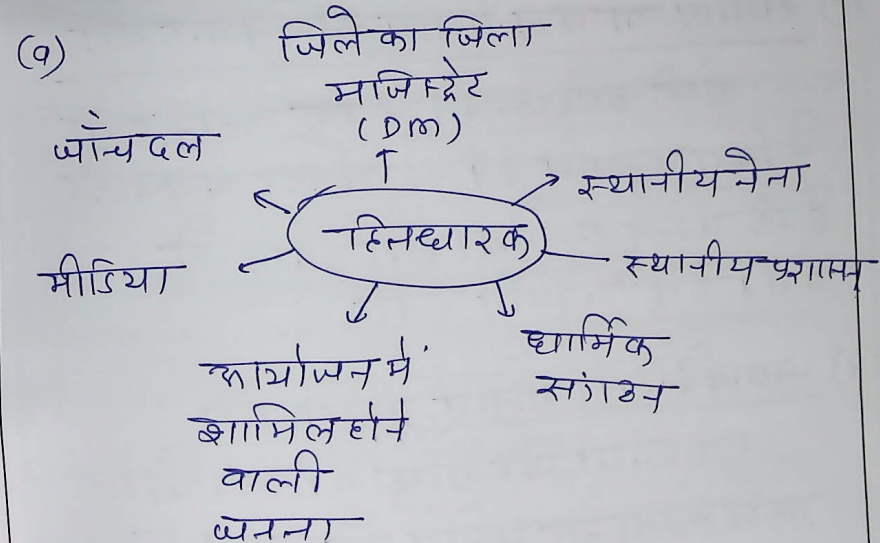
The tragedy leaves the community in shock and mourning, and the media and public quickly turn their attention to finding who is responsible. As the District Magistrate, you are at the center of the controversy. The question of accountability looms large, and both the religious organization and the local administration come under scrutiny. In the aftermath, an official inquiry is launched to investigate the causes of the stampede and determine whether negligence played a role. The inquiry reveals that the religious organization, despite its financial constraints, failed to implement even basic crowd control measures. However, the inquiry also points to the fact that the permission granted by your office lacked the necessary conditions and oversight, contributing to the disaster.

- (a) Mention the stakeholders involved in this case.
(b) What are the ethical challenges involved here?
(c) Why are Crowd crushes common in India and many of them have occurred at religious gatherings? What measures would you take to avoid it in the first place?

(250 Words) 20

उम्मीदवार को इस
हासिले में नहीं
लिखना चाहिए।
(Candidate must
not write on this
margin)

केस स्टडी — राजनीतिक दबाव एवं धार्मिक संगठनों के प्रभाव के कारण शर्तों में छूट देकर आयोजन की अनुमति देना और गंभीर हादसे में उत्तरदायित्व का संकट)



(b) नीतिशास्त्रीय चुनौतियाँ

(1) विधि का शासन बनाम राजनीतिक दबाव

• पर्याप्त सुरक्षा संरचना न होने पर अनुमानित न देना उचित और कानून सम्मत है परन्तु राजनेता द्वारा दबाव

(2) समाज का हित बनाम व्यक्तिगत हित

• उनके DM जानते हैं कि कबोड़ शर्तों के बिना अनुमानित न देना संभव नहीं है कि परन्तु राजनेता द्वारा दबाव से बचना हेतु अनुमानित देना

(3) जवाबदेही बनाम उदासीयता

100 लोगों की मृत्यु की जवाबदेहीता ग्रहण करना या यारोप की राजनेता और धार्मिक संगठनों का थोपना।

(c) भारत में अगड़ की घटना

कारण

(1) बिना सुरक्षा उपायों के आयोजन करना

(2) जगता में स्थिति अनुसार व्यवहार करने की आवश्यकता की कमी

(3) आयोजनकर्ता द्वारा प्रबंधन न कर पाना

(4) स्ट्रेज आदि का निम्न सामग्री से बनना साथ ही सुरक्षा यंत्रों की कमी होना

धार्मिक समारोहों में होने के कारण

(1) लोगों की गहरी धार्मिक आस्था, मंदिर विश्वास की प्रवृत्ति

(2) बड़ी संख्या में लोगों की उपस्थिति

(3) संविधान के अनु०-25, 26, 27 का हवाला देना

(4) अनुप्रति प्राप्ति हेतु धन-बल का उपयोग करना

रोकने हेतु उपाय

(1) सर्वप्रथम ऐसे आयोजनों की संख्या सीमा निर्धारित करना

(2) पयति सुरक्षा व्यवस्था होना पर ही अनुप्रति देना

(3) धार्मिक प्रवचनों आदि को ध्यानमात्र माध्यम से प्रसारित करने का सुझाव देना

(4) ऐसे आयोजनों में सुरक्षा हेतु सुरक्षा कर्मी की नियुक्ति करना

(5) अनिश्चितकालीन, दमकल गाड़ी जैसी व्यवस्था सुनिश्चित करना

अतः धार्मिक भावनाओं के ठेस न पहुँचाने हुए विधि का शासन का चालन करना

9.

श्रद्धा को हाल ही में एक धर्मार्थ अस्पताल का चिकित्सा अधीक्षक नियुक्त किया गया है जो स्थानीय और आस-पास के क्षेत्रों के गरीब एवं वंचित लोगों के लिये एक महत्वपूर्ण स्वास्थ्य सेवा सुविधा के रूप में कार्य करता है। अस्पताल के पास समुचित रूप से वित्त पोषण और पर्याप्त रूप से संसाधन होने के बावजूद, इसकी धर्मार्थ प्रकृति का अर्थ है कि कर्मचारियों का वेतन अपेक्षाकृत कम होना। इस वित्तीय बाधा ने एक चिंताजनक व्यवहार को उत्पन्न दिया है: कुछ कर्मचारियों ने शीघ्र या बेहतर सेवाओं के बदले में अमीर मरीजों से रिश्वत लेने की आदत विकसित कर ली है। यद्यपि इस अनैतिक व्यवहार के विषय में शिकायतें पहले भी सामने आई हैं, लेकिन अस्पताल के प्रबंधन ने आमतौर पर इस पर आँखें मूंद ली हैं और समस्या का सामना करने के बजाय इसे अनदेखा किया है।

(a) श्रद्धा के समक्ष उपस्थित नीतिशास्त्रीय दुविधा और उसके लिये उपलब्ध कार्यवाही के तरीके पर चर्चा कीजिये? साथ ही, उसके द्वारा उठाए गए कदम के पक्ष और विपक्ष पर भी चर्चा कीजिये।

(250 शब्द) 20

(b) अगर आप श्रद्धा के स्थान पर होते/होती तो क्या करते/करती?

Shradha has recently been appointed as the Medical Superintendent of a charitable hospital that serves as a crucial healthcare facility for the poor and underprivileged populations both locally and from surrounding areas. Despite the hospital being well-funded and adequately resourced, its charitable nature means that staff salaries are relatively low. This financial constraint has led to a concerning practice: some staff members have developed a habit of accepting bribes from wealthier patients in exchange for expedited or enhanced services. Although complaints about this unethical behavior have surfaced in the past, the hospital's management has generally turned a blind eye, choosing to ignore the problem rather than confront it.

(a) Discuss the ethical dilemma confronting Shradha and the course of action available to her? Also, discuss pros and cons of her action

(250 Words) 20

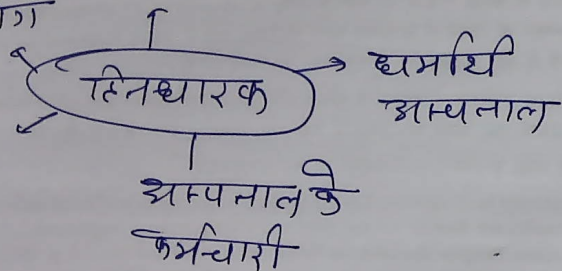
(b) What would you do if you were in Shradha's position?

कैसे रूढ़ी - धर्मार्थ संस्थानों का धर्म और परोपकार का हवाला देते हुए कर्मचारियों को कार्य के अनुसार वेतन न देना असंतोष की स्थिति उत्पन्न करता है।

प्रहारा (चिकित्सक आर्थीपुत्र)

उत्तीर
वेचित लोग

उत्तीर
मरीज



(9) प्रहारा के समस्त उपाधिन नीतिशास्त्रीय दृष्टि

(1) सहिय कदम उठाना बनाम उदासीयता
प्रहारा को कर्मचारी द्वारा रिश्वत लेने पर रोक लगाना चाहिये या जो चल रहा है उसे चलने देना चाहिये

(2) परोपकारिता बनाम विधि का पालन
चूंकि कर्मचारियों को कम वेतन मिलता है इसलिये वे उत्तीर मरीजों से

रिश्वत लेते हैं परन्तु यह प्रहारा को बढ़ावा देता है।

(3) सत्यनिष्ठा बनाम हिन पाखण्ड

चूंकि हमर्षि संस्थान में पयलिविस-चौषण के बावजूद, अस्पताल के प्रबंधन ने कर्मचारी को हमर्षि आव के कारण कम वेतन देना, हिन पाखण्ड है।

* उपलब्ध कार्यवाही के तरीके

(1) प्रहारा को सर्वप्रथम अस्पताल प्रबंधन के उदासीन रवैया की शिकायत करनी होगी

(2) कर्मचारियों द्वारा रिश्वत लेने को बंद करवाना

(3) विसर्पौषण एवं अनुदान की राशि से कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि का सुझाव देना

प्रश्न की कार्यवाही का मूल्यांकन

1) अभ्युत्थान एवं धन की शिकायत

पर	विपर
- भ्रष्टाचार पर रोक	- प्रश्न को अपने पद से हटाया जा सकता है।
- उदासीनता पर आवाज	- जान की खतरा

2) कर्मचारी को रिश्वत लेने से मना करना

पर	विपर
- बे-इमानदारी में ग्राहक	- कर्मचारी कम वेतन से संघर्ष
- अमीर मरीजा के शोषण पर रोक	- असंतोष

3) विनियोजन का प्रयोग

पर	विपर
- वेतन के वृद्धि	- धर्मार्थ कार्य हेतु वित्त की कमी
- भ्रष्टाचार पर रोक	- धन का विरोध

(b) यदि मैं प्रश्न की जगह रहती तो क्या करती

(1) सर्वप्रथम धर्मार्थ संस्थान के प्रबंधन की उदासीनता पर सख्त कदम उठानी

(2) कर्मचारियों द्वारा अमीर मरीजा से रिश्वत लेने पर रोक लगाकर, पारदर्शिता सुनिश्चित करनी

(3) विनियोजन के प्रयोग का एक भाग कर्मचारियों के वेतन वृद्धि में लगानी

(4) धर्मार्थ संगठन को प्राप्त अनुदान एवं धन का स्पष्ट ब्यौरा रखनी

इस प्रकार मैं; ग्राहक एवं सामाजिक कल्याण को सर्वप्रथम स्थान पर रखने का प्रयास करती।

10.

आर्यन विश्वविद्यालय के छात्र श्रेयस शर्मा को अपने निवास कक्ष में "जाति विशेषाधिकार की समझ" शीर्षक वाला बुलेटिन बोर्ड दिखाई देता है। वह इसे प्रचार मानता है और मानता है कि यह उच्च जाति के छात्रों के साथ भेदभाव करता है। जवाब में, श्रेयस ने फेसबुक पर एक निंदा पोस्ट की, जिसमें प्रमुख रूढ़िवादी हस्तियों अमित वर्मा और राजन पटेल को टैग किया ताकि परिसर में अत्यधिक उदारवाद की ओर ध्यान आकर्षित किया जा सके। यह पोस्ट तुरंत वायरल हो गई, जिसका समर्थन और विरोध दोनों हुआ।

प्रिया नामक एक छात्र पत्रकार श्रेयस का साक्षात्कार लेती है ताकि बुलेटिन बोर्ड की आलोचना करने के उसके उद्देश्यों को समझा जा सके। श्रेयस, जिसने इस तरह की प्रतिक्रिया की उम्मीद नहीं की थी और अब अपने पोस्ट पर पछतावा करता है, प्रिया से लेख में अपना नाम गोपनीय रखने के लिये कहता है। प्रिया के सामने एक नैतिक दुविधा है: श्रेयस के नाम न बताने के अनुरोध का सम्मान करना या उसके सार्वजनिक बयानों के लिये उसे उत्तरदायी ठहराना।

- विवाद को संबोधित करने में विश्वविद्यालय प्रशासन की नीतिशास्त्रीय जिम्मेदारी का मूल्यांकन कीजिये। मुक्त भाषण और समावेशिता के बीच संतुलन बनाने के लिये वे क्या उपाय कर सकते हैं?
- श्रेयस द्वारा सामना किये गए विरोध के संदर्भ में न्याय की अवधारणा पर विचार कीजिये। विश्वविद्यालय यह कैसे सुनिश्चित कर सकता है कि इसमें शामिल सभी पक्षों के साथ उचित व्यवहार हो और उन्हें समुचित रूप से उत्तरदायी ठहराया जा सके?
- जिन आलोचनाओं को श्रेयस झेल रहा है उससे प्रिया अवगत हैं। साक्षात्कारकर्ता के प्रति समानुभूति और पत्रकारिता की निष्पक्षता बनाए रखने के बीच नीतिशास्त्रीय संतुलन पर चर्चा कीजिये। (250 शब्द) 20

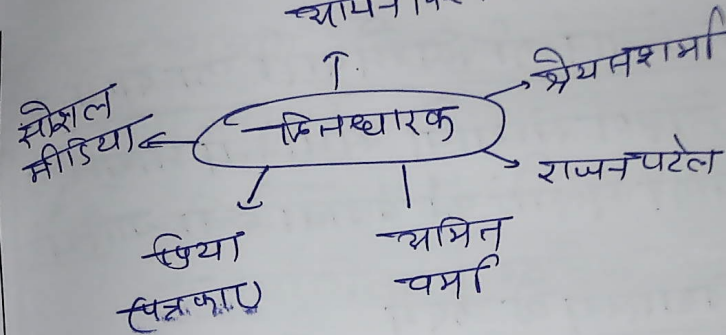
Shreyas Sharma, a student at Aryan University, comes across the bulletin board titled "Understanding Caste Privilege" in his residence hall. He perceives it as propaganda and believes it discriminates against upper-caste students. In response, Shreyas posts a denouncement on Facebook, tagging prominent conservative figures Amit Verma and Rajan Patel to draw attention to what he sees as excessive liberalism on campus. The post quickly goes viral, attracting both support and significant backlash.

Priya, a student journalist, interviews Shreyas to understand his motives for criticizing the bulletin board. Shreyas, who did not anticipate the extent of the backlash and now regrets his post, asks Priya to keep his name confidential in the article. Priya faces an ethical dilemma: respecting Shreyas's request for anonymity or holding him accountable for his public statements.

- Evaluate the ethical responsibility of the university administration in addressing the controversy. What measures could they take to balance free speech and inclusivity?
- Reflect on the concept of justice in the context of the backlash faced by Shreyas. How can the university ensure that all parties involved receive fair treatment and are held accountable appropriately?
- Priya is aware of the backlash Shreyas has faced. Discuss the ethical balance between empathy for the interviewee and maintaining journalistic objectivity. (250 Words) 20

कैस स्टडी - पत्रकारिता द्वारा किसी ब्याक्ने की गोपनीयता का बनाए रखना या सत्य को सामने लाने हेतु उजागर करना।

आर्यन विश्वविद्यालय



(v) विश्वविद्यालय की नीतिशास्त्रीय जिम्मेदारी

- जानिगत भेदभाव बनाम समानता
- श्रेयस शर्मा द्वारा जानि-भाधारित विशेषाधिकारों के प्रति आवाज उठाना समानता की स्थापना हेतु सहायक है।
- जानि-भाधारित कथनों का प्रयोग
- जबकि जानि-भाधारित विशेषाधिकार समाज में भेदभाव बढ़ाते हैं।

- शिक्षण संस्थान की जिम्मेदारी का दायित्व
- जो कि शिक्षण संस्थानों समानता आधारित
उदारवादी मूल्यों का बढ़ावा देना चाहिये

* विश्वविद्यालय के कदम

- 1) सर्वप्रथम पोस्ट के इंग्राम का पता
लगाकर, स्त्रोत तक पहुँचना
- 2) एक अनुशासन समिति का गठन कर
सम्पूर्ण मुद्दे पर विचार करना
- 3) विद्यार्थियों से प्रत्यक्ष बातचीत
सहारा लेकर सही निर्णय
लेना

* मुक्त भाषण और सभाविशेष के
बीच समन्वय

उपाय - विद्यार्थियों को वाद विवाद जैसी
प्रतियोगिता में शामिल करना

- गलत पक्षों हेतु त्रैतिक ज्ञान एवं
शिक्षा देना

- विद्यार्थियों में सामाजिक सामंजस्य
के मूल्य उत्पन्न करना

- बच्चों के बीच समन्वय को बढ़ावा
देना

11.

भारत में एक बड़ी बहुराष्ट्रीय आईटी कंपनी में अनुभवी विक्रय प्रतिनिधि राहुल ने कंपनी के भीतर, विशेष तौर पर अपने सहकर्मी अर्जुन के साथ गहरी मित्रता विकसित की थी। पिछले कुछ महीनों में, अर्जुन ने राहुल को अपनी पत्नी, बच्चों और बूढ़े माता-पिता का भरण-पोषण करने सहित अपने गंभीर वित्तीय संघर्षों के बारे में बताया था। अर्जुन ने काम पर जोखिम भरे कदमों का संकेत दिया था, लेकिन कभी भी विशिष्ट बातें नहीं बताईं।

जब अर्जुन ने अचानक कंपनी छोड़ दी, तो राहुल हैरान और सदिग्ध हो गया। उसने अर्जुन के कार्यभार को अपने नियंत्रण में ले लिया और जल्द ही उसे पता चल गया कि अर्जुन की धोखाधड़ी गतिविधियों से कंपनी को वित्तीय नुकसान हुआ है। अर्जुन ने एक योजना बनाई थी जिसमें फर्जी विक्रय ऑर्डर, अग्रिम कमीशन भुगतान प्राप्त करना और विलंबित वितरण के लिये बाहरी कंपनी के साथ मिलीभगत करना शामिल था, जिससे गैर-मौजूद विक्रय के लिये कमीशन प्राप्त किया जा सके।

उनकी आपस की बातचीत पर विचार करते हुए, राहुल को बेचैनी महसूस हुई, उसे अनुभव हुआ कि अर्जुन की हताशा ने उसे धोखाधड़ी करने के लिये प्रेरित किया। उसने प्रश्न किया कि क्या वह स्थिति को रोक सकता था और उसे जिम्मेदारी का अहसास हुआ। अर्जुन के चले जाने और आंतरिक जाँच शुरू होने के बाद, राहुल को नैतिक दुविधा का सामना करना पड़ा कि जो वह जो जानता था उसे उजागर करे या नहीं।

राहुल अपनी व्यक्तिगत सत्यनिष्ठता बनाए रखना चाहता था और कंपनी को इस मुद्दे को समझने में सहायता करना चाहता था, लेकिन उसे भय था कि सब कुछ उजागर करने से उसकी स्थिति खतरे में पड़ सकती है और उसे नौकरी से निकाला जा सकता है। वह अर्जुन की स्थिति से समानुभूति रखता था, वह अपने मित्र की रक्षा करने और अपने नीतिशास्त्रीय मानकों को बनाए रखने के बीच उलझन में था। राहुल इस बात से जूझ रहा था कि क्या सच्चाई को उजागर करना उसकी नौकरी और मित्रता को खोने के लायक है, खासकर तब जब कंपनी का वित्तीय नुकसान भयावह नहीं था और उत्पाद जीवन-मरण का प्रश्न नहीं था।

(a) पेशेवर संदर्भ में नीतिशास्त्रीय निर्णयन में समानुभूति का क्या प्रभाव होना चाहिये? क्या किसी सहकर्मी के व्यक्तिगत संघर्षों को समझना उसके अनैतिक कार्यों को उचित ठहरा सकता है या कम कर सकता है?

(b) राहुल के निर्णय में सबसे महत्वपूर्ण नीतिशास्त्रीय मूल्य क्या हैं?

(c) राहुल के निर्णय को कौन-से कारक प्रभावित करेंगे? (250 शब्द) 20

Rahul, an experienced sales representative at a large multinational IT company in India, had developed strong friendships within the company, especially with his colleague Arjun. Over recent months, Arjun had confided in Rahul about his severe financial struggles, including supporting his wife, children, and aging parents. Arjun had hinted at risky moves at work but never disclosed the specifics.

When Arjun abruptly left the company, Rahul was shocked and suspicious. He took over Arjun's sales territories and soon discovered the financial damage caused by Arjun's fraudulent activities. Arjun had orchestrated a scheme involving fictitious sales orders, receiving upfront commission payments, and colluding with an external company to delay deliveries, thereby securing commissions for non-existent sales.

Reflecting on their conversations, Rahul felt uneasy, realizing Arjun's desperation likely drove him to commit fraud. He questioned whether he could have prevented the situation and felt a sense of responsibility. With Arjun gone and an internal investigation underway, Rahul faced a moral dilemma about whether to disclose what he knew.

Rahul wanted to maintain his personal integrity and help the company understand the issue but feared that revealing all could jeopardize his position and lead to termination. He empathized with Arjun's plight, feeling conflicted between protecting his friend and upholding his own ethical standards. Rahul wrestled with whether exposing the truth was worth potentially losing his job and friendship, especially since the company's financial loss was not catastrophic and the product was not life-or-death.

- (a) How should empathy influence ethical decision making in a professional context? Can understanding a colleague's personal struggles justify or mitigate unethical actions?
(b) What are the most significant ethical values at stake in Rahul's decision?
(c) What factors should influence Rahul's decision?

(250 Words) 20

(a) पेशेवर संदर्भ में नीतिशास्त्रीय
चिन्तन में समानुभूति का प्रभाव

→ समानुभूति से आशय है दूसरों
के तथ्य से भावनात्मक संबंध
स्थापित कर, अहसास करना।

परन्तु पेशेवर (संदर्भ) में
गलत कार्रवाई पर समानुभूति
का सकारात्मक इवेंट है नु
प्रयोग करना चाहिए।

- सहकर्मियों के व्यक्तिगत हित या पेशेवर
हित

• क्योंकि व्यक्तिगत हितों की पूर्ति हेतु
कर्मचारी को नुकसान पहुंचाया
गलत नीति है।

• यतः सहकर्मियों के अर्थनिक कार्यों पर
रोक लगाया ही सही कदम होगा

(b) राहुल के चिन्तन में मुख्य

• राहुल गारमिजी संबंध के स्थान
पर व्यावसायिक हित की प्राथमिकता
देना

• पशुपति के स्थान पर सत्यानिष्ठा
एवं ईमानदारी का पालन करना

(1) राहुल के निर्णय को प्रभावित करने वाले कारक

- 1) राहुल के सहकर्मी के साथ गहरी मित्रता
- 2) अजुने की पारिवारिक स्थिति का कमजोर होना
- 3) अजुने द्वारा निजी आवश्यकता की पूर्ति हेतु गलत कदम उठाना
- 4) राहुल की व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा
- 5) कम्पनी के हित की चिंता

(2) राहुल द्वारा विद्ये के क्षामन का पालन का पथ

उपरोक्त सभी कारक राहुल के निर्णय को प्रभावित करेंगे।

12.

मुंबई में रहने वाली 28 वर्षीय सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर निशा ने विगत पाँच वर्षों में इंस्टाग्राम और यूट्यूब पर काफी संख्या में फॉलोअर्स प्राप्त किये हैं। अपनी जीवनशैली संबंधी कंटेंट के लिये जानी जाने वाली निशा प्रायः फैशन, ब्यूटी और वेलनेस सेक्टर के ब्रांड्स के साथ सहभाग करती हैं। उनके फॉलोअर्स उनकी प्रामाणिकता और विश्वसनीय कंटेंट के लिये उनकी प्रशंसा करते हैं और उन्होंने अपने व्यक्तिगत मूल्यों के अनुरूप उत्पादों का प्रचार करने के लिये प्रतिष्ठा बनाई है।

निशा को अनन्या अरोड़ा ने एक नए आहार पूरक का प्रचार करने के लिये संपर्क किया है जो जल्दी वजन घटाने का वादा करता है। अभियान एक आकर्षक सौदा प्रदान करता है, जो निशा द्वारा अब तक किसी एकल साझेदारी से अर्जित की गई राशि से कहीं अधिक है। राहुल, उसका प्रबंधक, उसे प्रस्ताव स्वीकार करने के लिये प्रोत्साहित करता है, वित्तीय लाभ और अधिक फॉलोअर्स प्राप्त करने की क्षमता पर जोर देता है।

हालाँकि, निशा को कुछ संदेह है। उत्पाद पर शोध करने पर, उसे स्वास्थ्य विशेषज्ञों से मिली-जुली समीक्षाएँ और चिंताएँ मिलती हैं, जिनमें डॉ. अरविंद राव भी शामिल हैं, जो ऐसे सप्लीमेंट्स की सुरक्षा और प्रभावशीलता पर प्रश्न उठाते हैं। निशा जानती है कि उसके कई फॉलोअर्स स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती संबंधी सलाह के लिये उससे परामर्श लेते हैं और संभावित रूप से असुरक्षित उत्पाद का प्रचार करने से उनकी विश्वसनीयता को नुकसान पहुँच सकता है और उसके फॉलोअर्स जोखिम में पड़ सकते हैं।

निशा को प्रिया ने सुझाव दिया कि उसे नैतिकता के बारे में बहुत अधिक चिंता नहीं करनी चाहिये। उसका तर्क है कि फॉलोअर्स अपनी पसंद के लिये स्वयं जिम्मेदार हैं और इस तरह की साझेदारी इंडस्ट्री में आम बात है। प्रिया ने स्वयं भी बिना किसी विरोध का सामना किये इसी तरह के उत्पादों का प्रचार किया है।

निशा अब दोराहे पर खड़ी है। एक तरफ, वह इस प्रस्ताव को स्वीकार कर सकती है, अपनी कमाई को काफी बढ़ा सकती है और अपने फॉलोअर्स की संख्या बढ़ा सकती है। दूसरी तरफ, किसी ऐसे उत्पाद का प्रचार करना जिस पर उसे पूरा विश्वास नहीं है, उसके मूल्यों से समझौता कर सकता है और संभवतः उसके फॉलोअर्स को खतरे में डाल सकता है।

उपरोक्त केस स्टडी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:

- क्या प्रभावशाली लोगों के लिये उन उत्पादों का प्रचार करना नीतिशास्त्रीय रूप से सही है, जिनका वे व्यक्तिगत रूप से उपयोग नहीं करेंगे या अपने प्रियजनों को उनकी प्रेरक शक्ति के कारण अनुशंसा नहीं करेंगे? यह "किसी को हानि न पहुँचाएँ" सिद्धांत के साथ कैसे संरेखित होता है?
- क्या प्रभावशाली व्यक्तियों को उनके द्वारा समर्थित उत्पादों से होने वाले संभावित नुकसान के लिये उत्तरदायी ठहराया जाना चाहिये?
- एक प्रभावशाली व्यक्ति को अपने वित्तीय हितों और अपने दर्शकों के प्रति नीतिशास्त्रीय दायित्वों के बीच संघर्ष का समाधान कैसे करना चाहिये?

(250 शब्द) 20

Nisha, a 28-year-old social media influencer based in Mumbai, has gained a significant following on Instagram and YouTube over the past five years. Known for her lifestyle content, she frequently collaborates with brands in the fashion, beauty, and wellness sectors. Her followers admire her for her authenticity and relatable content, and she has built a reputation for endorsing products that align with her personal values.

Nisha is approached by Ananya to promote a new dietary supplement that promises quick weight loss. The campaign offers a lucrative deal, far more than Nisha has ever earned from a single partnership. Rahul, her manager, encourages her to accept the offer, emphasizing the financial benefits and the potential to gain more followers.

However, Nisha has reservations. Upon researching the product, she finds mixed reviews and concerns from health experts, including Dr. Arvind Rao, who questions the safety and effectiveness of such supplements. Nisha is aware that many of her followers look up to her for health and wellness advice, and promoting a potentially unsafe product could harm her credibility and put her followers at risk.

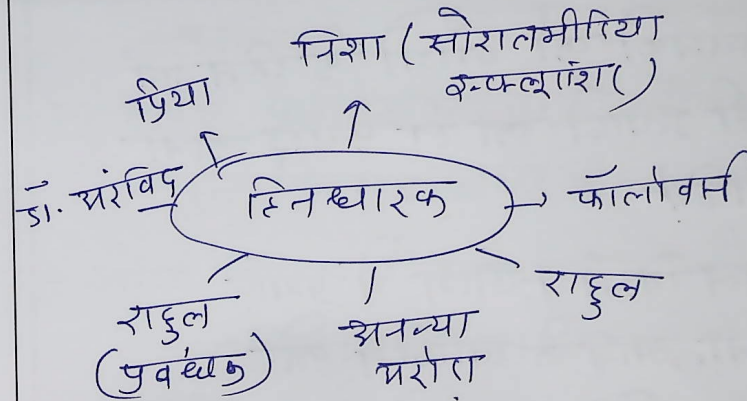
Priya, her friend, suggests that Nisha should not worry too much about the ethics, arguing that followers are responsible for their own choices and that such partnerships are common in the industry. Priya herself has promoted similar products without facing any backlash.

Nisha is now at a crossroads. On one hand, she could accept the deal, significantly boost her earnings, and expand her reach. On the other hand, promoting a product she does not fully trust could compromise her values and possibly endanger her followers.

Based on the above case study, answer the following questions:

- Is it ethical for influencers to promote products they would not personally use or recommend to loved ones, given their persuasive power? How does this align with the "do no harm" principle?
- Should influencers be held accountable for the potential harm caused by the products they endorse?
- How should an influencer navigate the conflict between their financial interests and their ethical obligations to their audience?

(250 Words) 20



उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(a) किसी को हानि न पहुँचाए

सिद्धान्त का महत्व

- 1) जिस उत्पाद का उपयोग इन्फ्लूएंसा स्वयं की हानि मानते हैं उसका प्रचार-प्रसार करना, यथार्थ है।
- 2) प्रचारकों को लोगों के हित एवं सही उत्पादों का ही प्रचार करना चाहिए।
- 3) केवल विभीषण लाभ में प्रचार करना, आज के व्यक्ति को बढ़ाता है।
- 4) सभी के जीवन को महत्व देना।

(b) उत्तरदायी ठहराए

- प्रचारकों को उनके द्वारा प्रचारित उत्पादों के लिये जिम्मेदार ठहराया जाना है।
क्योंकि लोग मानते हैं कि प्रचारक स्वयं उत्पाद का प्रयोग करना
- लोग, प्रभावशाली व्यक्तियों पर बहुत विश्वास करता है।
- लोग, बिना जाँच के उत्पादों को केवल विश्वास के आधार पर प्रयोग करते हैं।

(4) समाधान

(1) प्रभावशाली व्यक्ति को विभीषण
हित के स्थान पर दशकीं तक
सही उत्पाद के पट्टे की
सुनिश्चित करना चाहिये

(2) गलत उत्पादों की कम्पनी पर
कैसा करना चाहिये

(3) कादनी कार्यवाही द्वारा
गलत कम्पनी पर
पान्य करना
चाहिये

Space for Rough Work
(रफ कार्य के लिये स्थान)



Space for Rough Work
(रफ़ कार्य के लिये स्थान)